Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 10 | ISSUE : 12 | SPECIAL ISSUE DECEMBER-2024

शिक्षण में बहुविषयक द्वष्टिकोण का महत्व

पंकज कुमार सिंह	भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर.
डॉ. साक्षी शर्मा	असिस्टेंट प्रोफेसर शिक्षा संकाय भगवंत विश्वविद्यालय अजमेर.

ABSTRACT:

एक ही विषय को एक से अधिक विषयों की दृष्टिकोण से अध्ययन करना है जिसे क्रॉस डिसिप्लीनरी भी कहा जाता है।

यह दृष्टिकोण किसी भी पाठ्यक्रम को एकीकृत करने की एक विधि होती है जिसमें अलग-अलग विषयों अवधारणाओ तथा किसी मुद्दे को स्पष्ट करने के लिए विविध दृष्टिकोण उत्पन्न कर उसके तथ्य एक पहुंचने में सहायक होता है।

शिक्षण में बहुविषयों दृष्टिकोण अधिगम को सुगम और सरल तरीके से विद्यार्थी तक एक सकारात्मक एवं सटीक प्रतिफल तक पहुंचने में सहायक होता है। इसके अंतर्गत एक ही अवधारण को एक ही एक से अधिक विषयों के कई दृष्टिकोण के माध्यम से सिखलाया जाता है। इस प्रकार यह विद्यार्थी को विभिन्न तरीकों से दृष्टिकोण और ज्ञान प्राप्त करने में सहायता करता है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति (NEP 2020) ने भी छात्रों के हितों को ध्यान में रखकर एक अनूठी शैक्षिक प्रणाली के रूप में बहुविषय दृष्टिकोण पर बल दिया है।

अंततः हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि एक शिक्षक के रूप में जब छात्रों के लिए शिक्षण की प्रक्रिया में बहुविषय दृष्टिकोण अपनाया जाएगा तो इसमें छात्रों की सम्मान सहयोग की भावना एवं मानवीय मूल्य की प्राप्ति हो सकेगी।

KEYWORDS:

-

प्रस्तावना:

मनुष्य ने प्रत्येक क्षेत्र में आगे बढ़ने के अपने प्रयास में एक लंबा सफर तय किया है। मनुष्य ने जो भी उपलविधयाँ हासिल की हैंए उनका श्रेय मनुष्य की जियास प्रवृत्ति को जाता है। अपने जिज्ञासु स्वभाव और प्रवृति की मदद से उसने पृथ्वी के कई रहस्यों का पता लगाया है। परिणामस्वरूप आज हमारा आधुनिक समाज आश्चर्यजनक प्रगति और शानदार आविष्कारों से भरा हुआ है। शैक्षणिक रूप से हमारी प्रगती उतकृष्ट है। लेकिन अभी भी लंबा सफर तय करना है।

वैज्ञानिक विकास मऔर आविष्कारों के अलावा वैश्वीकरण एवं उदारीकरण की अवधारणा ने कई समस्याओं और चुनौतियों को जन्म दिया है। इन्हीं समस्याओं में विभिन्न विषयों की विषयवस्तु हैं। जाहिर है इन समस्याओं का समाधान केवळ एक विषय में शोध की मदद से नहीं हो सकता है। बल्कि इसके लिए सभी विषयों के सम्मिलित प्रयास की आवश्यकता है।

→ विभिन्न विषयों के बीच अंतर:

विषयों के बीच अंतर के बारे में चर्चा करते समय मुख्य विचार यह था कि लोगों नें प्रयोगवादियों और सिद्धांतकारों के बीच काम करने और अवधारणाओ में स्पष्ट अंतर देखा है कुछ लोग इसे एक लाभ के रूप में भी भी मानते है क्योकि यह एक हीं समस्या को हल करने के लिए अधिक दृष्टीकोण प्रदान करता है।

मौलिक शोधकर्ताओं और अनुप्रयुक्त शोधकर्ताओं के बीच अनुसंधान उदेश्यों में अंतर के बारे में अकसर बताया जाता है। दरसल मौलिक शोध का उद्देश्य दूनिया के बारे में ज्ञान और समझ हासिल करना है। बिना इस बात कि परवाह किए की खोजागया ज्ञान व्यावहारिक उपयोग का होगा या नहीं। जबकि अनुप्रयुक्त शोध का लक्ष्य व्यावहारिक समस्या को हल करने के लिए वैज्ञानिक जाँच करना है। शोध उद्देश्यों में ये अंतर बड़ी गलतफहमी और सहयोग में कठिनाइयों का कारण बन सकते हैं।

→ बहुविषयक अनुसंधान की आवश्यकता:

यह वर्तमान में शोध समस्या को हल करने का सबसे व्यावहारिक और

प्रभावी तरीका बन गया है।

तेजी से आगे बढ़ते समाज के इस युग में राजनीतिए अनोविज्ञान जैसे अन्य विषयों से संबंधित कई प्रकार की सामाजिक.आर्थिक समस्याएं उत्पन्न हुई है। जिनके समाधान के लिए व्यापक दुष्टिकोण की आवश्यकता है। उदाहरण के लिए अर्थशास्त्री लागत प्रभावी तंत्र पर ध्यान केन्द्रित कर सकते हैं।श् समाजशास्त्री गरीबों को सशक्त बनाने और सामाजिक समानता को दूर करने पर मानव विज्ञानी स्थानीय रीति रिवाजों प्रथाओं और सामाजिक संरचनाओं को स्वीकार करने पर।

इन विविध दृष्टिकोणों को सामिल किये बिनाए और आर्थिक समाजशात्रीय और सांस्कृतिक चर आदि की परस्पर क्रिया के बिना पुष्टि पूर्वा ग्रह का जोखिम काफी बढ़ जाता है। इसके परिणामस्वरूप बहुविषयक अनुसंधान को अपनाया गया है। जो न केवल विकसित देशों में बल्कि पूरे विश्व में प्रचलन में है।

→ बहुविषयक अनुसंधान का महत्व:

किसी समस्या के सभी पहलुओं को अध्ययन करने के लिए बहुविषयक शोध का बहुत महत्व है।

यह मुद्दे के आंशिक या एकतरफा परिणाम को कम करता है। हम जानते हैं कि मानव जीवन विभिन्न कारकों से प्रभावित होता है। इसलिएए किसी भी पहलु का अलग से अध्ययन करनाए यानी अन्य विषयों की अनुपस्थिति में स्पष्ट तस्वीर नहीं देगा। विषय एक दूसरे से अलग है, लेकिन यह केवल अकादमिक रूप से सच है।

इसलिए किसी भी मुद्दे का अध्ययन अनिवार्य रूप से अन्य विषयों की सहायता मांगता है। इस संबंध में बहुविषयक शोध का दृष्टिकोण समग्र पहलु का पता लगाने के लिए इसके महत्व को प्रकट करता है।

निष्कर्ष:

शिक्षा में बहुविषयक दृष्टिकोण एक नई पद्धति हैए जो छात्रों को विभिन्न क्षेत्रों से अलग.अलग विषयों या पाठ्यक्रमों का अन्वेषण और अध्ययन करने की अनुमति देती है। बहुविषयक दृष्टिकोण नये विचारों को समझने का अवसर देती है। यह एक व्यावहारिक दृष्टिकोण विकसित करने में मदद करता है कि कौन से विषय चुने जाएं और इनके संभावित लाभ कया हो सकते हैं। इससे जोखिम और लाभों की गणना करके निर्णय लेने का समय मिलता है। इस प्रकार एक बहुविषयक कार्यक्रम व्यवहारिकता और लचिलापन लाता है।

REFERENCES

1. सिंह, निरंजन कुमार, माध्यमिक विद्यालयों में हिन्दी शिक्षण, राजस्थान हिंदी ग्रंथ।
2. भाई योगेन्द्रजीत, हिंदी भाषा शिक्षण, विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा।
3. सिंह, सावित्री, हिंदी शिक्षण, गया प्रसाद एण्ड संस आगरा।
4. गेज, एन.एल. शैक्षिक मनोविज्ञान !